ओम् शान्ति 06-04-2020 मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा अपनी एक्यूरेट दिनचर्या प्रमाण तीव्र पुरुषार्थ करने वाले, श्रेष्ठ मनन चिंतन और गहन तपस्या के द्वारा शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने वाले, मधुबन की वार्षिक मीटिंग में सम्मिलित होने वाले सभी प्लैनिंग बुद्धि टीचर्स बहिनें और भाई,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

ड्रामा की निश्चित भावी प्रमाण आप सब अपनी निश्चित स्थिति में रह अपने-अपने स्थानों पर रह बहुत अच्छी तपस्या कर रहे होंगे। अभी तक मधुबन में होने वाले सभी कार्यक्रम 30 अप्रैल 2020 तक स्थगित हैं। तो हम सबको यह समय मिला है एकान्त में रमण करते हुए अपने तन और मन को सशक्त बनाने का। मीटिंग के समय एजेन्डा प्वाइंट के साथ स्व-उन्नति के लिए विशेष हर वर्ष सीज़न में चली हुई अव्यक्त मुरलियों का सार आप सबको दिया जाता है।

इस बार प्यारे अव्यक्त बापदादा के अवतरण के 11 टर्न बनाये गये थे। जिसमें 9 टर्न में तो बाबा के बच्चे मधुबन घर में पहुंचकर सम्मुख में वीडियो द्वारा अव्यक्त मिलन का, मधुबन घर के शक्तिशाली वायुमण्डल का लाभ प्राप्त कर सके। दो मुरलियां आप सबने अपने-अपने स्थानों पर सुनी। उन्हीं 11 मुरलियों का सार आज आपके पास भेज रहे हैं। अभी आपको इन्हें अच्छी रीति गहराई से पढ़ने, समझने और उसका मनन चिंतन कर अपने स्वरूप में लाने का यह गोल्डन चांस है। आशा है आप सब अवश्य इसका गहन अध्ययन करेंगे। अच्छा - सभी को याद.. ओम् शान्ति।

सीजन में चली हुई अव्यक्त मुरलियों का सार (वीडियो द्वारा रिवाइज)

17-10-2019

1) बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए अपने सम्पन्न व सम्पूर्ण रूप को प्रत्यक्ष करो। जैसे लक्ष्य बहुत अच्छे ते अच्छा रखते हो ऐसे लक्ष्य और लक्षण समान हो तब बाप समान बनने का लक्ष्य प्रैक्टिकल में आ जायेगा।

2) बापदादा की हर बच्चे के प्रति आश है कि समय प्रमाण हर एक बच्चा तीव्र पुरुषार्थी बने। जब समय सम्पन्न होने में तीव्रता से चल रहा है तो बच्चों को बाप समान बनने में भी तीव्रता चाहिए।

3) वर्तमान समय के प्रमाण मन्सा-वाचा और कर्मणा तीनों सेवायें साथ-साथ चाहिए। मन्सा द्वारा शक्तियों का, वाणी द्वारा ज्ञान के खजाने का, चलन और चेहरे द्वारा सम्पूर्ण योगी जीवन के प्रैक्टिकल रूप का अनुभव कराओ।

4) सेवा का सबसे सहज साधन है - **वृत्ति द्वारा वायब्रेशन बनाना और वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना।** जैसे साइंस की राकेट फास्ट जाती है, वैसे आपकी रूहानी शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति, दृष्टि सृष्टि को बदल सकती है। एक स्थान पर बैठे भी वृत्ति द्वारा सेवा करो।

5) वृत्ति रूहानी और शक्तिशाली तब बनेगी जब अपने दिल में, मन में किसी के प्रति भी उल्टी वृत्ति का वायब्रेशन नहीं होगा। अपने मन की वृत्ति सदा स्वच्छ रखो। अगर मन में जरा भी निगेटिव बातों का किचड़ा है तो शुभ वृत्ति से सेवा नहीं कर सकेंगे।

6) पहले अपने मन की निगेटिव वृत्तियों को, अपनी शुभ भावना, शुभ कामना से पॉजिटिव में चेन्ज करो। मन में कोई भी व्यर्थ वा निगेटिव की खिटखिट न हो। जो रांग है उसको रांग और जो राइट है उसको राइट समझना है लेकिन दिल में नहीं बिठाना है। अगर कोई भी खराब चीज़ मन में वा दिल में है, वेस्ट थॉटस हैं तो विश्व कल्याणकारी नहीं बन सकते।

7) जैसे दूसरों को कोर्स कराते हो निगेटिव को पॉजिटिव में कैसे बदलें, ऐसे अपने को भी यह कोर्स कराओ। जो भी आपके सम्पर्क में आये उसे **''दुआ दो और दुआ लो।''** चाहे वह बद्दुआ दे, आप दुआ दो।

8) हर एक की विशेषता को जान उस विशेषता को अपना बनाओ। सभी बच्चों में चाहे 99 गलतियां भी हों लेकिन एक विशेषता जरूर है, जिस विशेषता से मेरा बाबा कहने का हकदार है। परवश है लेकिन बाप से प्यार अटूट है।

9) अभी समय की समीपता प्रमाण हर एक स्थान और साथियों में श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल होना आवश्यक है इसलिए एक अक्षर याद रखो अगर कोई बद्दुआ देता है, तो आप उसे अपने पास सम्भालके नहीं रखो क्योंकि आपकी दिल बापदादा का तख्त है।

10) अगर कोई आत्मा परवश है तो आप क्षमा के सागर के बच्चे उसे क्षमा कर दो। इसमें हे अर्जुन बनो। आपके सामने कोई भी आये वह कुछ न कुछ स्नेह ले, क्षमा का, हिम्मत का, सहयोग का, उमंग-उत्साह का अनुभव करे।

11) अभी आप सब बच्चे निवारण मूर्त बन जाओ। आपके निवारण मूर्त बनने से आत्मायें निर्वाण में जा सकेंगी। तो निर्वाण का गेट आपको ही खोलना है। आपस में अब इसकी डेट फिक्स करो।

12) आजकल का जमाना एक्सरसाइज़ का है। तो आप भी समय निकालकर 5-5 मिनट भी मन की एक्सरसाइज़ जरूर करो। कभी मन को परमधाम में ले जाओ कभी सूक्ष्मवतन में फरिश्तेपन को याद करो, फिर पूज्य रूप याद करो, फिर ब्राह्मण रूप याद करो, फिर देवता रूप याद करो। यह मन की एक्सरसाइज, मन को सदा खुश रखेगी। उमंग-उत्साह में रखेगी, उड़ती कला का अनुभव करायेगी।

15-11-2019

1) आप सभी ने अपने फिकर बाप को देकर बाप से फखुर ले लिया इसलिए सदा बेफिक्र और बादशाह बन चलते हो। बेफिक्र की निशानी हर एक के मस्तक में लाइट, आत्मा चमकती हुई दिखाई देती है।

2) बाप ने आप सबको प्रकृतिजीत, विकारों जीत बना दिया तो फिकर कैसे आ सकता है! बापदादा अभी हर बच्चे को बेफिक्र बादशाह देखने चाहते हैं। अगर कभी थोड़ा बहुत फिकर आता है तो मेरे को तेरे में बदल लो। जब हर एक दिल से कहते हो मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा तो मेरे को तेरे को समाना मुश्किल है क्या?

3) आपके मस्तक पर जो लाइट का ताज है यही बेफिक्र आत्मा की निशानी है। आप विकारों पर सम्पूर्ण विजयी बने हो इसलिए यह ताज दिखाया है। आप बादशाहों को बापदादा ने तीन तख्त के मालिक बनाया है। एक है भृकुटी का तख्त, दूसरा है बापदादा का दिलतख्त और तीसरा है विश्व राज्य का तख्त।

4) बापदादा का दिलतख्त सबसे श्रेष्ठ तख्त है लेकिन इस तख्त पर वही बैठ सकता है जिसने बापदादा को अपने दिलतख्त पर बिठाया है। जो सदा मास्टर सर्वशक्तिवान की श्रेष्ठ स्थिति में रहते हैं। कभी देहभान की मिट्टी में नहीं आते।

5) बापदादा बच्चों को समय का इशारा दे रहे हैं - अचानक का पाठ पक्का करा रहे हैं। संगम के समय पर दो बातों का हर समय अटेन्शन देना है - एक समय और दूसरा संकल्प। व्यर्थ संकल्पों में समय बहुत जाता है, अब इसे समाप्त करो, तब समय प्रमाण विश्व की दु:खी, अशान्त आत्माओं को सुख शान्ति का अनुभव करा सकेंगे। अभी जल्दी-जल्दी उन्हों को वारिस बनाओ, जो कुछ न कुछ वर्से के अधिकारी बन जायें।

6) बापदादा ने सभी बच्चों को साथ ले चलने का वायदा किया है, साथ चलने की तैयारी की है? बाप तो सेकण्ड में अशरीरी बन जायेंगे लेकिन आपकी तैयारी है? सेकण्ड में बिन्दी लगाई, सम्पन्न और सम्पूर्ण बन चला। ऐसी तैयारी है? चेक करो समय तो अचानक आना है, तो इतनी तैयारी है जो साथ में चलें?

7) साथ हैं, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और साथ राजधानी में राज़ घराने में आयेंगे। अगर कल भी विनाश हो जाए तो तैयार हो? अपनी सेवा को समाप्त किया है? ऐसे तो कोई नहीं कहेगा कि हमको तो पता ही नहीं पड़ा, बाप आया और चला भी गया, हम वंचित रह गये! तो सेवा करके उल्हना तो पूरा करो।

8) दृढ़ता सफलता की चाबी है। बापदादा सभी बच्चों को दृढ़ता के चाबी की सौगात दे रहे हैं। दृढ़ता को कभी भी हल्का नहीं करना। दृढ़ता आपको सदा सहज आगे बढ़ाती रहेगी।

30-11-2019

1) आप श्रेष्ठ स्वमानधारी विशेष आत्मायें विश्व की सभी आत्माओं के पूर्वज और पूज्य हो। सारे सृष्टि के वृक्ष की जड़ में आप आधारमूर्त हो। सारे विश्व के पूर्वज पहली रचना हो।

2) बड़े ते बड़े साइंसदान भले प्रकृतिजीत बने, चन्द्रमां तक भी पहुंच गये लेकिन छोटी सी ज्योति स्वरूप आत्मा को नहीं पहचान सके! आप फ़लक से कहते हो ''मैं आत्मा हूँ।'' महात्मायें जो परमात्मा को पाना मुश्किल समझते हैं, आप कहते हो हमने तो परमात्मा को पा लिया, वह कहते आग कपूस साथ में नहीं रह सकते, आप प्रवृत्ति में रहते, साथ रहते पवित्र रहते हो। जिन बातों को लोग असम्भव कहते, आप कहते हो यह सब सम्भव है।

3) आपको फ़खुर है कि हम परमात्मा के डायरेक्ट बच्चे हैं! इस नशे और निश्चय के कारण, माया से, सब विघ्नों और समस्याओं से बचे हुए हो। आप निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन कर लेते हो। आप परिवर्तन की शक्ति से, साइलेन्स की शक्ति से समस्या को समाधान स्वरूप बना देते हो। कारण को निवारण रूप में बदल देते हो।

4) आपके दिल का गीत है ''पाना था वो पा लिया।'' इस फखुर में रहने कारण सदा बेफिक्र रहते हो। किसी भी प्रकार का बोझ वा फिक्र बापदादा को दे दिया, बाप सागर है तो सारा बोझ उसमें समा जायेगा।

5) साक्षी-दृष्टा के स्थिति की सीट पर सेट होकर पुरानी दुनिया के खेल देखो, त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हो जाओ तो बहुत मज़ा आयेगा। सीट से नीचे आयेंगे तो अपसेट होंगे।

6) दुनिया में तीन चीज़ें हर एक को परेशान करती हैं: 1- चंचल मन, 2- भटकती बुद्धि और 3- पुराने संस्कार। जब पुराने संस्कारों को मेरा कहते हो तब वह अपनी जगह बना लेते हैं। आप ब्राह्मण इन्हें मेरा नहीं कह सकते। यह पास्ट जीवन के, शूद्र जीवन के संस्कार हैं। आप श्रेष्ठ आत्माओं के पुराने ते पुराने संस्कार हैं - अनादि और आदि संस्कार।

7) आप पूज्यनीय आत्माओं का विशेष लक्षण है - दुआ देना। दुआ देना ही दुआ लेना अण्डरस्टुड हो जाता है। जो दुआ देता है, जिसको देता है उसकी दिल से बार-बार देने वाले के लिए दुआ निकलती है। तो आपका निजी संस्कार, अनादि संस्कार, नेचुरल संस्कार है दुआ देना। जब आप किसी को दुआ देते हैं तो वह आत्मा कितना खुश होती है, वह खुशी का वायुमण्डल सुखदाई बन जाता है। तो इसे अपनी नेचुरल नेचर बनाते, करते और कराते रहना।

8) संकल्प करो कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ, इस संकल्प से माया के तूफान भी तोहफा बन जायेंगे। कितना भी ऊंचा पहाड़, पहाड़ बदल के रूई बन जायेगा। अभी समय की समीपता प्रमाण वरदानों को हर समय अनुभव में लाओ। अनुभव की अथॉरिटी बनो। अभी चलने वाले नहीं, उड़ने वाले बनो क्योंकि चलने वाले समय पर पहुंच नहीं सकेंगे।

15-12-2019

1) आप सब चैलेन्ज से कहते हो कि हम योग लगाने वाले नहीं लेकिन योगी जीवन वाले हैं। जीवन दो चार घण्टे की नहीं सदाकाल के लिए होती है। तो चलते फिरते निरन्तर योगी, कर्म करते कर्मयोगी बनो। जीवन का लक्ष्य ही है सदा योगी।

2) बापदादा का हर बच्चा स्वमानधारी, स्वराज्य अधिकारी है। जहाँ स्वमान है वहाँ देहभान आ नहीं सकता। बापदादा ने जो हर एक को भिन्न-भिन्न स्वमान दिये हैं, उन स्वमानों की माला फेरते जाओ तो अनेक स्वमान स्वरूप बन, स्वमान में लवलीन हो जायेंगे।

3) सर्वशक्तिवान बाप बच्चों की मेहनत नहीं देख सकते। जहाँ मोहब्बत होती है वहाँ मेहनत नहीं होती। जहाँ मेहनत

है वहाँ मोहब्बत में कमी है। कई बच्चे स्वमान याद करते हैं, लेकिन स्वमान स्वरूप बन, अनुभवी मूर्त बन अनुभव के अथॉरिटी स्वरूप बनने में कमी है। मेहनत करते हैं लेकिन अनुभव स्वरूप नहीं बनते।

4) जो बच्चे स्वमान के अनुभवी हैं उन्हें किसी भी प्रकार का देह अभिमान जरा भी अपने तरफ खींच नहीं सकता। वे कर्म करते भी कर्मयोगी के अनुभव स्वरूप में खो जाते। तो ज्ञान, योग, धारणा और सेवा, चार ही सबजेक्ट में अनुभवी स्वरूप बनो। अनुभवी को माया कभी भी हिला नहीं सकती। स्वमान की सीट पर बैठकर अनुभव का स्विच ऑन करो तो किसी भी प्रकार का देहभान ठहर नहीं सकता।

5) हर एक अपने को चेक करो कि मैं कर्मयोगी जीवन वाला हूँ? अनुभवी मूर्त बनने का जो लक्ष्य रखा है उसमें सम्पन्न बना हूँ? सदा मस्तक से चमकती हुई लाइट खुद को भी अनुभव होती है? हर कार्य करते हुए स्मृति सो समर्थी स्वरूप का अनुभव होता है?

6) एक सेकण्ड में चार ही सबजेक्ट में अपने स्वमान के अनुभवी स्वरूप की अनुभूति हो तो देह-अभिमान नजदीक आ नहीं सकता। जैसे रोशनी के आगे अंधकार ठहर नहीं सकता, उसे निकालना नहीं पड़ता। ऐसे अनुभव है तो उसे धोखा मिल नहीं सकता।

7) अभी समय प्रमाण सब अचानक होना है, बताके नहीं होना है। इकट्ठे एक समय अनेकों की टिकेट कट रही है, ऐसे समय में आप एवररेडी हो? या कहेंगे कि मैं तो अभी पुरुषार्थ कर रहा हूँ? एवररेडी अर्थात् कोई भी वरदान या स्वमान का संकल्प किया और स्वरूप बना।

8) बापदादा इस बात पर बच्चों को अटेन्शन दिला रहे हैं कि किसी भी वरदान को फलीभूत कर वरदान या स्वमान के स्वरूप के अनुभवी बनो। बनना ही पड़ेगा। कोशिश कर रहा हूँ, पुरुषार्थी हूँ... नहीं, अनुभवी हूँ क्योंकि अनुभव की अथॉरिटी स्वयं आलमाइटी अथॉरिटी ने आपको दी है।

9) चेक करो ज्ञान स्वरूप बना हूँ? या ज्ञान सुनने सुनाने वाला बना हूँ? ज्ञान स्वरूप बनना अर्थात् जो भी कर्म करेंगे वह लाइट और माइट वाला, यथार्थ होगा। योग स्वरूप का अर्थ है कर्मेन्द्रियों जीत बनना। हर कर्मेन्द्रिय पर स्वराज्यधारी। अगर कोई ज्ञान योग का स्वरूप है तो हर गुण की धारणा और सेवा हर समय ऑटोमेटिक जीवन से दिखाई देगी।

10) किसी को समय पर सहयोग दिया, स्नेह दिया, यह भी सेवा का पुण्य जमा होता है। गिरे हुए को उठाना यह पुण्य है। तो मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्पर्क सम्बन्ध में सेवा ऑटोमेटिक और अखण्ड होती रहे।

11) जब कहते हो कि हम प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाने वाले हैं, तो क्या जो ब्राह्मण आत्मा किसी संस्कार वश है.. उस आत्मा का परिवर्तन नहीं कर सकते हो! सच्चा सेवाधारी अपने सेवा का पुण्य कमाने के लिए उसके प्रति भी शुभ भावना अवश्य रखेगा। ऐसे नहीं कि यह तो बदल ही नहीं सकता, यह शुभ भावना नहीं, यह सूक्ष्म घृणा भावना है।

12) जैसे ब्रह्मा बाप ने अन्त में शुभ भावना, शुभ कामना के तीन शब्द सभी को शिक्षा रूप में दिये। निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी इसी स्थिति में अव्यक्त बनें। ऐसे ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता भव का वरदान जो बाप ने करके दिखाया, फॉलो ब्रह्मा बाप।

13) बापदादा का लास्ट बच्चे से भी प्यार है। कोई कैसा भी है लेकिन प्यार में पास है। जैसे आप कहते हो मेरा बाबा, तो बाप भी कहते मेरे बच्चे हैं। ऐसी शुभ भावना आपस में परिवार की भी होना आवश्यक है। किसी का भी भाव-स्वभाव – प्यार को, सम्बन्ध को खत्म नहीं करे।

14) यह प्रभु परिवार, परमात्म परिवार है, इसमें कोई भी कारण से प्यार की कमी नहीं होनी चाहिए। प्यार अर्थात् शुभ भावना जरूर हो। कोई कैसा भी है, परमात्म परिवार है। यह परिवार का प्यार ही विघ्न मुक्त बना देगा।

31-12-2019

1) आप सबके दिल में खुशी है कि हमारे बाप ने हमें सबसे ऊंचे ते ऊंची नव युग की गिफ्ट दे दी है। निश्चय है और निश्चित है। यह भावी, यह जन्म सिद्ध अधिकार कभी टल नहीं सकता।

2) बापदादा चाहते हैं कि हर एक बच्चा अब बाप समान बनें। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए बाप को फालो करो। दृढ़ संकल्प करो कि कुछ भी पुरुषार्थ करना पड़े लेकिन बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना ही है।

3) ब्रह्मा बाप की सम्पूर्णता का विशेष आधार रहा - जो अपना हर समय, श्वांस, सेकण्ड-सेकण्ड सब सफल किया। तो बाप समान बनने के लिए सब कुछ सफल करना है और सफलतामूर्त बनना है। चेक करो कि सफलतामूर्त बन समय, श्वांस, खजाने, शक्तियां, गुण सब सफल कर रहे हैं?

4) समय सफल करने वाले भविष्य में फुल समय राज्य भाग्य प्राप्त करेंगे। श्वांस सफल करने वाले 21 जन्म स्वस्थ रहेंगे। ज्ञान का खजाना सफल करने वाले भविष्य में ऐसे समझदार बनेंगे जो कोई वजीरों की राय नहीं लेनी पड़ेगी। जो शक्तियों को स्व प्रति व दूसरों के प्रति सफल करते हैं उनके पास भविष्य में सर्व शक्तियां होंगी। कोई भी शक्ति कम नहीं होगी। अगर गुण दान करेंगे तो लास्ट जन्म तक आपकी महिमा सर्वगुण सम्पन्न के रूप में होगी।

5) सब कुछ सफल करने के लिए बापदादा बहुत सहज विधि बताते हैं, जो भी संकल्प करो, पहले चेक करो संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सब बाप समान है? ब्रह्मा बाप को फालो करो। सोचो, चेक करो बाप ने यह किया? जैसा ब्रह्मा बाप ने किया वैसा ही स्वरूप बनो।

6) जैसे ब्रह्मा बाप फरिश्ता बना, ऐसे आपको भी फरिश्ता सो देवता बनना ही है। कई बच्चे बीच-बीच में आपोजीशन के कारण अपनी पोजीशन से नीचे आ जाते हैं। लेकिन याद करो ब्रह्मा बाप ने अपने स्वमान की सीट पर बैठ पोजीशन द्वारा आपोजीशन का सामना किया। जहाँ पोजीशन है वहाँ आपोजीशन कुछ नहीं कर सकती।

7) ब्रह्मा बाप ने स्वयं स्वमान की सीट और दृढ़ निश्चय के शस्त्रों द्वारा आपोजीशन को समाप्त किया। आप भी अपने स्वमान की सीट पर बैठ जाओ, तो आपोजीशन, पोजीशन में बदल जायेगी। हिम्मत रखो पहले स्व के परिवर्तन की, फिर अनेक सम्बन्ध-सम्पर्क वाली और विश्व की आत्माओं को अपने मन्सा शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा, दृढ़ संकल्प द्वारा परिवर्तन करो।

8) अगर दिल से वा अधिकार से मेरा बाबा कहेंगे, तो परिवर्तन की शक्ति सेकण्ड में हाज़िर हो जायेगी। उस परिवर्तन की शक्ति से निगेटिव संकल्प, निगेटिव चलन को देखते हुए उसे पॉजिटिव में चेंज कर दो। पॉजिटिव देखना, बोलना, करना, शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा सहज हो जायेगा।

9) कोई भी शक्ति को कार्य में लगाने की विधि – ''मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ'', इस स्मृति की सीट पर बैठ जाओ, अगर इस सीट पर बैठेंगे तो अपसेट नहीं होंगे।

10) इस वर्ष हर एक को मन्सा द्वारा शक्तियों की, वाचा द्वारा ज्ञान की और कर्मणा द्वारा गुणों की गिफ्ट दो। जो भी सम्पर्क में आये उनको खूब अविनाशी सौगातें दो। कोई को भी खाली जाने नहीं दो। इसके लिए अटेन्शन रख हर समय मन्सा में शक्तियों का स्टॉक इमर्ज रखो, वाचा के लिए मन में ज्ञान को मनन करने की शक्ति धारण करो और चलन, चेहरे व कर्म में गुणों का स्वरूप बनो।

11) खुशनसीब हो, खुश चेहरे वाले हो, कभी रोब का चेहरा नहीं बनाना। आपका चेहरा सदा मुस्कराता रहे। इस वर्ष क्रोध या उसके बाल बच्चों को भी विदाई देना। रोब भी न हो। क्रोध करने से कोई सुधरता नहीं है और ही चिढ़ जाता है। अगर बड़ा है तो मन में आपोजीशन करता है और छोटा है तो रोने लग जाता है।

12) जहाँ भी कोई मुश्किल आवे तो बस दिल से कहना, मेरा बाबा, मेरा साथी आ जाओ, मदद करो। तो बाबा भी बंधा हुआ है। अभी समय चैलेन्ज कर रहा है और आप माया को चैलेन्ज करो।

13) अब समय की पुकार, दु:खियों की पुकार, भक्तों की पुकार सुनो। बिचारे हिम्मतहीन हैं, उन्हों को हिम्मत के, उमंग-उत्साह के पंख लगाओ तो उड़ तो सकें।

18-01-2020

1) एक हैं लवलीन बच्चे और दूसरे हैं लवली बच्चे, दोनों के स्नेह की लहरें बाप के पास पहुँच रही हैं। हर एक बच्चे के दिल से ऑटोमेटिक गीत बज रहा है - ''मेरे बाबा''। बापदादा के दिल से भी यही गीत बजता - ''मेरे बच्चे, लाडले बच्चे, बापदादा के भी सिरताज बच्चे''।

2) यह स्मृति दिवस कितनी स्मृतियां दिलाता है और हर स्मृति सेकण्ड में समर्थ बना देती है। जब बाप के बने तो बाप ने स्मृति दिलाई, आप कल्प पहले वाली भाग्यवान आत्मा हो। इस पहली स्मृति से आत्म अभिमानी बनें और परमात्म बाप के स्नेह का नशा चढ़ गया।

3) स्नेह का पहला शब्द निकला ''मेरा मीठा बाबा'' इसी गोल्डन शब्द से सारी परमात्म प्राप्तियां अपनी हो गई। जहाँ प्राप्तियां होती हैं वहाँ याद करना नहीं पड़ता, याद स्वत: आती है। बाप का खजाना मेरा हो गया, जहाँ मेरापन होता है वहाँ सहज याद हो जाती है।

4) ''मेरा बाबा'' कहा और भाग्य विधाता अखुट खजाने के दाता को मेरा बना लिया। परमात्म पालना के अधिकारी बन गये, ऐसी परमात्म पालना सारे कल्प में एक ही बार मिलती है। यह स्नेह सब बातें सहज कर देता है, मेहनत को मिटा देता है।

5) बापदादा इस वर्ष को न्यारा वर्ष, प्यारा वर्ष, मेहनत से मुक्त वर्ष, समस्या से मुक्त वर्ष मनाने चाहते हैं क्योंकि अब सबको मुक्तिधाम जाना है, अनेक दु:खी अशान्त आत्माओं को मुक्तिदाता बाप के साथी बन मुक्ति दिलाना है। तो मास्टर मुक्तिदाता जब स्वयं मुक्त बनेंगे तब तो मुक्ति वर्ष मनायेंगे ना!

6) एक भाषा जो मुक्ति दिलाने के बजाए बंधन में बांधती है, समस्या के अधीन बनाती है, वह है ऐसा नहीं, वैसा। वैसा नहीं ऐसा ... जब समस्या आती है तो यही कहते हैं बाबा ऐसा नहीं था, वैसा था ना। ऐसा नहीं होता तो, ऐसा होता ना! यह है बहाने बाजी करने का खेल।

7) मैजॉरिटी के प्रतिज्ञा करने का फाइल पेपर से भरा हुआ है लेकिन फाइनल नहीं हुआ है। दृढ़ प्रतिज्ञा के लिए कहते हैं - जान चली जाए लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। तो इस वर्ष फाइल को फाइनल करना। फाइल में एक और कागज एड़ नहीं करना। इसके लिए झुकना पड़े, बदलना पड़े, सहन करना पड़े, सुनना पड़े, लेकिन बदलना ही है।

8) वर्तमान समय एक तरफ साइन्स, दूसरे तरफ भ्रष्टाचारी, तीसरे तरफ पापाचारी, सब अपने-अपने कार्य में और वृद्धि करते जा रहे हैं। बहुत नये-नये प्लैन बनाते जाते हैं। आप वर्ल्ड क्रियेटर के बच्चे हो, तो आप इस वर्ष ऐसी नवीनता के साधन अपनाओ जो प्रतिज्ञा दृढ़ हो जाए और प्रत्यक्षता हो जाए।

9) इस वर्ष जो भी सेवा करो, मानो मुख की सेवा करते हो, तो सिर्फ मुख की सेवा नहीं, मन्सा वाचा और स्नेह सहयोग रूपी कर्म एक ही समय में तीन सेवायें इकट्ठी हों। अलग-अलग नहीं। बापदादा कहते हैं कि अब पुरानी भाषा, पुरानी चाल, अलबेलेपन की, कडुवेपन की.. इसका परिवर्तन करो।

10) बापदादा विनाश का पर्दा तो अभी भी इसी सेकण्ड में खोल सकता है लेकिन पहले राज्य करने वाले तो तैयार हों। तो अब से तैयारी करेंगे तब समाप्ति समीप लायेंगे। किसी भी कमजोरी की बात में कारण नहीं बताओ, निवारण करो। समस्या समाप्त हो जाए, समाधान होता रहे।

11) आप सभी ने जन्म लेते ही बाप से वायदा किया है - साथ रहेंगे, साथी बनेंगे और साथ चलेंगे और ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में आयेंगे। अगर साथ में चलना है तो समान बनना ही पड़ेगा। कहावत भी है हाथ में हाथ हो, साथ में साथ हो। तो हाथ में हाथ अर्थात् समान।

12) बापदादा के पास बहुत दु:ख और अशान्ति के, परेशानी के आवाज आते हैं। आप लोगों के पास नहीं सुनने आते? आपके भी तो भक्त होंगे ना! तो भक्तों की पुकार आप इष्ट देवों को नहीं आती? टीचर्स को भक्तों की आवाज सुनाई देती है? आवाज सुनो, सभी को मुक्ति दो।

13) बापदादा खुश है कि सभी का मुरली से प्यार है और मुरली से प्यार अर्थात् मुरलीधर से प्यार। कोई कहे मुरलीधर से प्यार है लेकिन मुरली कभी-कभी सुन लेते हैं, बापदादा उसका प्यार, प्यार नहीं समझते हैं। मधुबन में मुरली बाजे, मधुबन का गायन है। मधुबन की धरनी का ही महत्व है।

02-02-2020

1) बच्चों के 5 मुख्य रूपों के कारण ब्रह्मा को 5 मुखी दिखाते हैं। पहला रूप है - चमकता हुआ ज्योति बिन्दु रूप। 2- देवता रूप 3- पूज्यनीय रूप 4- ब्राह्मण रूप और 5- फरिश्ता रूप। सारे दिन में यही 5 रूप सोचो और मन में उसका अनुभव करो। मन को इस रूहानी एक्सरसाइज़ में बिजी करो तो मन सदा शक्तिशाली रहेगा। हर घण्टे 5 सेकण्ड, 5 मिनट यह एक्सरसाइज जरूर करो।

2) यज्ञ सेवा, विश्व सेवा तो सभी कर रहे हो और करनी ही है। यह 5 मिनट की ड्रिल करने के बाद जो अपना कार्य है उसमें लग जाओ। बाप का मन्त्र मिला हुआ है मनमनाभव। तो यही मन्त्र मन के अनुभव से मायाजीत बनने में यन्त्र बन जायेगा।

3) विश्व परिवर्तन करने के पहले अपने मन को शक्तिशाली बनाओ। जिस समय जो संकल्प करने चाहो वही संकल्प मन में उत्पन्न हो। जैसे इस शरीर की कर्मेन्द्रियों को आर्डर करते हो, तो ऊपर नीचे करती हैं। ऐसे मन के मालिक बन इसे आर्डर से चलाओ तो व्यर्थ व अयथार्थ से बच जायेंगे।

4) मनजीत, जगतजीत बनना है तो पहले से यह अभ्यास करो कि जहाँ चाहें वहाँ मन सहज टिक जाये। जो जो संकल्प करें उसी अनुसार मन बुद्धि संस्कार आर्डर में हों, जिसका यह अभ्यास होगा वह जगतजीत अवश्य बनेगा।

5) आपने आधाकल्प से माया को अपना बनाया है इसलिए माया का भी आप लोगों से प्यार है, वह बार-बार आने की कोशिश करती है। अब इस पर जीत प्राप्त करने के लिए दिल से मेरा बाबा कहो तो बाप का सहयोग मिल जायेगा। एक बार दिल से कहेंगे मेरा बाबा तो हजार बार बाप बंधा हुआ है, शक्तिशाली सहयोग देने के लिए।

6) सभी कहते हो कि बाबा ही मेरा संसार है, जब संसार दूसरा नहीं है तो संस्कार कहाँ से आये! बापदादा अभी समय प्रमाण इस संस्कार शब्द को मिटाने चाहते हैं। संस्कार का काम है आना और बच्चों का काम है दृढ़ संकल्प के पुरुषार्थ द्वारा उसे समाप्त करना। अब इसकी डेट फिक्स करो। जब मास्टर सर्वशक्तिवान हो तो संकल्प को पूरा करना, यह भी शक्ति है ना!

7) देश वा विदेश के सभी सेन्टर्स और उसके कनेक्शन के सेन्टर्स 6 मास निर्विघ्न रहकर दिखाओ तो निर्विघ्न भव का डे (दिन) मनायेंगे। 6 मास का अभ्यास होगा तो आगे भी आदत हो जायेगी।

8) अब चारों ओर सन्तुष्टता का बोलबाला हो। चाहे सेवा में, चाहे जो नियम बने हुए हैं उस नियम में, अभी जल्दी-जल्दी कदम को आगे करना, क्यों? अचानक क्या भी हो सकता है इसलिए बाप यही चाहते हैं कि हर एक उड़ते रहो, उड़ाते रहो।

20-02-2020

1) बाप और बच्चों का इतना गहरा प्यार है जो जन्म भी साथ है और रहते भी साथ में हो। हर एक यही उमंग-उत्साह से कहते हो कि हम बाप के साथ कम्बाइन्ड हैं। आप सबका वायदा है कि साथ हैं, साथ रहेंगे और अपने स्वीट होम में साथ चलेंगे।

2) भक्त लोग बाप और बच्चों के विचित्र जन्म दिन पर भावना से वृत्ति को श्रेष्ठ बनाने के लिए खाने-पीने का व्रत रखते हैं, उन्हों को हर वर्ष रखना पड़ता और आप एक ही बार पवित्रता का पक्का व्रत लेते हो।

3) जहाँ पवित्रता है वहाँ अगर अंश मात्र भी अपवित्रता है तो उसे सम्पूर्ण पवित्र आत्मा नहीं कह सकते। पवित्रता ब्राह्मण जन्म की प्रापर्टी है, पर्सनैलिटी है, रॉयल्टी है। तो चेक करो कि मुख्य पवित्रता के ऊपर तो अटेन्शन है लेकिन उनके जो और भी चार साथी हैं, उनका भी व्रत लिया है? ऐसे तो नहीं बड़े को ठीक किया है और छोटों से प्यार रखा है!

4) आप सबको जन्मते ही वरदान मिला है - ''पवित्र बनो, योगी बनो''। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य को नहीं कहा जाता लेकिन ब्रह्मचर्य के साथ ब्रह्माचारी बनना अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत पालन करना। कईयों का प्यार छोटे-छोटे बाल बच्चों से हो जाता है। वाचा, कर्मणा में नहीं लेकिन मन्सा में आ जाते हैं, तो सोचते हैं इसे तो कोई देखता नहीं है।

5) अगर क्रोध या मोह ..... कोई भी विकार आता है तो कारण क्या? जरूर आपने दरवाजा खोला है तब तो आता है। कमजोरी का दरवाजा खोलना अर्थात् उसका आह्वान करना।

6) भक्त लोग शिवरात्रि पर जागरण भी करते हैं, आपका जागरण कौन सा है? अलबेलापन, आलस्य और बहानेबाजी की नींद से जागना.... यही सच्चा जागरण है। बापदादा इन तीन बातों में हर समय जागरण देखना चाहते हैं।

7) जब कभी किसी को क्रोध, लोभ या अभिमान आता है तो उसका कारण एक बात ट्रेडमार्क के रूप में बोलते हैं - यह तो चलता है, यह तो होता ही है, यह कोई नई बात थोड़ेही है.. यही अलबेलापन है। मैजारिटी बच्चे कारण बताते हैं कि इसने क्रोध किया तो मुझे भी आ गया। दूसरे पर दोष रखना बहुत सहज है। बाप की श्रीमत पर क्या क्रोध को खत्म नहीं कर सकते हो?

8) क्रोध का बच्चा रोब भी भिन्न-भिन्न प्रकार से आता है। तो जैसे पहली बात का विशेष दृढ़ संकल्प किया है। ऐसे ही चार का भी संकल्प करो। यह बहाना नहीं दो कि इसने किया तब मेरे से हुआ, यह बहानेबाजी है। संस्कारों का सामना तो करना ही है, यही पेपर है।

9) अभी समय का कोई भरोसा नहीं है और इस ज्ञान के आधार पर हर पुरुषार्थ की बात में बहुतकाल का हिसाब है इसलिए बापदादा यही चाहते हैं कि संकल्प में दृढ़ता हो। हो जायेगा.. चलता है, चलने दो, कौन बना है.... यह हिम्मतवान के बोल नहीं हैं।

10) कोई-कोई कह देते हैं कि महारथी भी तो ऐसे करते हैं... लेकिन जब कोई गलत कर रहा है तो उस समय वह महारथी है ही नहीं, उसे महारथी कहके अपने को कमजोर करना, यह अपने को धोखा देना है। दूसरे को देखना सहज होता है, अपने को देखने में हिम्मत चाहिए।

11) कमजोरी और बहानेबाजी के हिसाब-किताब का बहुत बड़ा किताब है, उसको खत्म करो। दृढ़ संकल्प करो कि मुझे यह करना ही है, झुकना ही है, बदलना ही है, परिवर्तन सेरीमनी मनानी ही है क्योंकि आप एक नहीं हो। आपके पीछे पूरी राजधानी में आपकी रॉयल फैमिली, रॉयल प्रजा, फिर द्वापर से आपके भक्त.... आपके पीछे लम्बी लाइन है। जो आप करेंगे वह आपके पीछे वाले करने लगेंगे।

12) कई बच्चे कहते हैं जब कोई झूठ बोलता है तो मुझे बहुत गुस्सा आता है। लेकिन जब जानते हो सारी दुनिया ही झूठी है, सच्चा बाप आपके साथ है, आपने सच्चे बाप से वेरीफाय कराया, तो विजय आपकी निश्चित हुई पड़ी है, कोई आपको हिला नहीं सकता, इसलिए उस झूठ को झूठ कर दो।

13) अब कोई भी कमजोरी आने का गेट बन्द करो। डबल ताला लगा दो, एक याद का, दूसरा मन को सेवा में बिजी रखने का, यह दो आलमाइटी ताले लगा दो। गोदरेज का नहीं गॉड का।

06-03-2020

1) भाग्यविधाता बाप ने हर एक के श्रेष्ठ कर्म की कलम से अविनाशी भाग्य की रेखायें खींची हैं। भाग्यवान बच्चों के मस्तक में चमकती हुई ज्योति की रेखा, नयनों में रूहानियत के भाग्य रेखा, मुख में श्रेष्ठ वाणी के भाग्य की रेखा, होठों में रूहानी मुस्कराहट की रेखा, हाथों में सर्व परमात्म खजानों की रेखा, याद के हर कदम में पदमों की रेखा और हृदय में बाप के लव में लवलीन की रेखा स्पष्ट दिखाई देती है।

2) अभी के दिव्य संस्कार आपका नया संसार बना रहे हैं। भविष्य संसार में एक राज्य होगा। तो चेक करो अभी भी मन में, बुद्धि में, सम्बन्ध-सम्पर्क में, जीवन में एक राज्य है? या कभी-कभी आत्मा के राज्य के साथ-साथ माया का राज्य भी हो जाता है?

3) भविष्य में एक राज्य के साथ सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा का एक ही धर्म है। चेक करो संकल्प, बोल, कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में एक ही धारणा सम्पूर्ण पवित्रता की है? ब्रह्माचारी हैं? स्वप्न में भी पवित्रता खण्डित तो नहीं होती है?

4) भविष्य राज्य में अखण्ड सुख, अखण्ड शान्ति, अखण्ड सम्पत्ति है, तो अब स्वराज्य के जीवन में चेक करो परमात्म सुख, अविनाशी अनुभव होता है? किसी भी कारण से दु:ख की लहर तो नहीं आती? सुख का अनुभव कोई साधन या सैलवेशन के आधार पर, नाम, मान-शान के आधार पर तो नहीं है?

5) सभी ने जन्मते ही बापदादा से वायदा किया है कि हम सभी बाप के साथी बन, विश्व कल्याणकारी बन नया सुख शान्तिमय संसार बनाने वाले हैं। यह पक्का वायदा है या थोड़ा गड़बड़ हो जाती है?

6) सुख के साथ शान्ति को भी चेक करो - अशान्त सरकमस्टांश, अशान्त वायुमण्डल उसमें भी हम शान्ति सागर के बच्चे सदा कमल पुष्प समान अशान्ति को भी शान्ति के वायुमण्डल में परिवर्तन कर सकते हैं? परिवर्तक परवश तो नहीं हो जाते?

7) स्वराज्य अधिकारी की अखुट सम्पत्ति - ज्ञान, गुण और शक्तियां हैं। चेक करो - ज्ञान के सारे विस्तार के सार को स्पष्ट जान गये हैं? हर संकल्प, कर्म, बोल, ज्ञान अर्थात् समझदार, नॉलेजफुल बनके करते हैं? सर्वगुण प्रैक्टिकल जीवन में इमर्ज रहते हैं? सर्व हैं वा यथाशक्ति हैं? क्या सर्व शक्तियों से सम्पन्न हैं? सर्व शक्तियां समय पर कार्य करती हैं? समय पर हाज़िर हो जाती हैं या समय बीत जाने के बाद याद आती हैं?

8) अभी के बहुतकाल का अभ्यास बहुतकाल की प्राप्ति का आधार है। स्वराज्य का जो अधिकार है वह अभी बहुतकाल चाहिए। अगर एक जन्म में अधिकारी नहीं बन सकते, अधीन बन जाते तो अनेक जन्म कैसे होंगे! अभी समय की रफ्तार तीव्रगति में जा रही है इसलिए अभी सिर्फ पुरुषार्थी नहीं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी बनो। पुरुषार्थ की प्रालब्ध का बहुतकाल से अनुभव हो।

9) तीव्र पुरुषार्थी सदा देने वाले मास्टर दाता होंगे, लेवता नहीं। यह करे तो मैं करूं, यह बदले तो मैं बदलूं ... नहीं, कोई करे या न करे, लेकिन मैं बापदादा समान करूं। ब्रह्मा बाप ने कभी नहीं कहा कि बच्चे करें तो मैं करूं, मैं करके बच्चों से कराऊं।

10) तीव्र पुरुषार्थी सदा हर कार्य करते भी निर्माण और निर्मान दोनों का बैलेन्स रखेंगे। निर्मान बनकर कार्य करने से उन्हें सर्व द्वारा दिल का स्नेह और दुआयें प्राप्त होंगी। जितना सेवा के कार्य में उमंग-उत्साह है उतना निर्मान स्टेज का बैलेन्स हो तो सफलता और ज्यादा प्रत्यक्ष रूप में हो सकती है।

11) निर्मान स्वभाव, निर्मान बोल और निर्मान स्थिति से सम्बन्ध-सम्पर्क में आना, मुख से जो भी बोल निकलें वह जैसे हीरे मोती, अमूल्य। अभी निर्मल वाणी, निर्मान स्थिति में और अटेन्शन चाहिए।

12) हर एक को तीन खाते जमा करने हैं - एक अपने पुरुषार्थ से जमा का खाता बढ़ाना। दूसरा - सदा स्वयं भी सन्तुष्ट रह दूसरों को सन्तुष्ट करना, इससे दुआओं का खाता जमा होता है। तीसरा - सेवा में सदा नि:स्वार्थ, मैं

पन नहीं। इससे पुण्य का खाता जमा होता है। रॉयल रूप का भी मेरापन न हो। मैं और मेरेपन का स्वार्थ पुण्य के खाते को कम कर देता है।

13) वैरायटी संस्कार होते भी हमारे ऊपर औरों के कमजोर स्वभाव, संस्कारों का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। इसमें सेफ्टी का साधन है बापदादा की छत्रछाया में रहना, बापदादा के साथ कम्बाइण्ड रहना। छत्रछाया है श्रीमत।

20-03-2020

1) आज की धर्म सत्ता, राज्य सत्ता, साइंस की सत्ता.. तीनों ही हलचल में हैं। साइन्स भी अभी प्रकृति को यथार्थ रूप में चला नहीं सकती। साइंस के साधन होते, प्रयत्न करते भी प्रकृति अभी कन्ट्रोल में नहीं है। आगे चलकर यह प्रकृति के खेल और भी बढ़ते जायेंगे। ऐसे समय पर साइलेन्स की शक्ति ही विश्व परिवर्तन करेगी।

2) इस हलचल को मिटाने का कार्य परमात्म पालना के अधिकारी आत्मा के सिवाए और कोई नहीं कर सकता। आप सभी को भी यही उमंग-उत्साह है कि हम ब्राह्मण आत्मायें बापदादा के साथ भी हैं और परिवर्तन के कार्य के साथी भी हैं।

3) जितना दुनिया में तीनों सत्ताओं की हलचल है उतना आप शान्ति की देवियां, शान्ति के देवों को शक्तिशाली शान्ति की शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। जैसे सेवा के क्षेत्र में आवाज अच्छा फैला रहे हो, ऐसे अब शान्ति की शक्ति के वायब्रेशन चारों ओर फैलाओ। सेवा की जिम्मेवारी कितनी भी बड़ी हो लेकिन सेवा के सफलता का प्रत्यक्ष फल शान्ति की शक्ति से ही निकलेगा।

4) अभी सारे कल्प की प्रालब्ध, राज्य की और पूज्य की इकट्ठा करने का यही समय है, आगे चलकर और भी नाजुक समय आना है। ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति द्वारा टचिंग पॉवर, कैचिंग पॉवर बहुत आवश्यक होगी। ऐसा समय आयेगा जो यह साधन कुछ नहीं कर सकेंगे, सिर्फ आध्यात्मिक बल, बापदादा के डायरेक्शन्स की टचिंग कार्य करा सकेगी।

5) मन और बुद्धि में बापदादा की टचिंग तब आयेगी जब मन बुद्धि सदा ही क्लीन और क्लीयर होगी, इसके लिए बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। किसी भी आत्मा के प्रति या कार्य के प्रति जरा भी अगर मन बुद्धि में निगेटिव होगा तो उसको क्लीन और क्लीयर नहीं कहा जायेगा।

6) अभी रिहर्सल बढ़ती जायेगी और सेकण्ड में रीयल हो जायेगी इसलिए बापदादा अटेन्शन खिंचवा रहे हैं। सारे दिन में चेक करो - साइलेन्स पावर कितनी जमा की? सेवा करो लेकिन शान्ति के शक्ति सम्पन्न सेवा करो। स्व प्रति शान्ति की शक्ति जमा करने का, परिवर्तन करने का और अटेन्शन दो।

7) दिन-प्रतिदिन दु:ख और अशान्ति बढ़ रही है और बढ़नी ही है। कोई अति में जाके परेशानी से जी रहे हैं। ऐसे समय पर भक्त अपने इष्ट को याद कर रहे हैं, धर्म गुरूओं के तरफ नज़र घुमा रहे हैं और साइंस वाले भी अभी यही सोच रहे हैं – कैसे करें, कब तक होगा!

8) अभी सबकी दिल में यही पुकार है कि आखिर भी गोल्डन मॉर्निंग कब आनी है। जैसे प्रॉब्लम हल करने के लिए मीटिंग करते हो ऐसे अब याद और सेवा के लिए मीटिंग करो, प्लैन बनाओ। याद का अर्थ है शान्ति की पॉवर और वह प्राप्त तब होगी जब आप टॉप की स्टेज पर होंगे।

9) सबसे टॉप है परमधाम। तो सेवा की और फिर टॉप की स्टेज पर बाप के साथ बैठ जाओ। दूसरा टॉप का स्थान है सृष्टि चक्र में संगम का समय। तो नीचे आये, सेवा की फिर टॉप स्थान पर चले जाओ। अभी समय आपको पुकार रहा है इसलिए आपस में ऐसे-ऐसे प्लैन बनाओ।

10) एक दो की बातों को, स्वभाव को, वृत्ति को समझते हुए सदा हाँ जी, हाँ जी करते चलो तो संगठन की शक्ति साइलेन्स की ज्वाला प्रगट करेगी।

03-04-2020

1) ज्ञान का फाउण्डेशन है निश्चय। कहा जाता है निश्चय बुद्धि विजयी। जैसे बाप में हर एक बच्चे का अटूट निश्चय है ऐसे स्व में, ड्रामा में और परिवार में भी पक्का निश्चय होना चाहिए।

2) जैसे कहते हो मेरा बाबा और मैं बाबा की। मेरा कहकर बाप के द्वारा अधिकारी बन सर्व खजानों के अधिकारी बन गये। ऐसे स्व में भी निश्चय चाहिए, नहीं तो दिलशिकस्त बन जायेंगे। स्व में निश्चय अर्थात् मैं स्वमानधारी हूँ, स्वराज्य अधिकारी हूँ। स्वयं बापदादा ने मुझ आत्मा को स्वमानधारी बनाया है। स्वमान के आधार पर निश्चय और नशा आपके चलन और चेहरे से दिखाई दे।

3) इस ड्रामा में भी निश्चय बहुत जरूरी है क्योंकि ड्रामा में समस्यायें भी आती हैं और सफलता भी होती है। अगर ड्रामा में पक्का निश्चय है तो समस्या को समाधान स्वरूप में बदल देंगे। ड्रामा के ज्ञान से अचल अडोल रहेंगे, हलचल में नहीं आयेंगे।

4) ड्रामा का निश्चय नशा पक्का कराता है, फखुर रहता है कि कल्प पहले भी मैं समाधान स्वरूप सफल आत्मा बनी थी, बनी हूँ और कल्प के बाद भी मैं ही बनूंगी इसलिए इस पुरुषार्थी जीवन में ड्रामा का निश्चय बहुत आवश्यक है।

5) इन तीनों निश्चय के साथ-साथ परिवार में भी निश्चय आवश्यक है क्योंकि इतना बड़ा परिवार किसी डिवाइन फादर का भी नहीं है। वहाँ फॉलोअर हैं, यहाँ परिवार है। परिवार के साथ ही सेवा में, सम्बन्ध में रहते हो।

6) ऐसे नहीं सोचना कि हमारा तो बाप से कनेक्शन है, परिवार से नहीं हुआ तो क्या हुआ। परिवार का निश्चय तो 21 जन्म चलना है। परिवार के साथ सम्बन्ध में आने से मालूम होता है कि मैं इतने बड़े परिवार में सभी से निश्चयबुद्धि हो चल रहा हूँ!

7) परिवार में हर एक के संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और होंगे। इसका यादगार माला है, माला में कहाँ एक नम्बर और कहाँ 108 वां नम्बर क्योंकि परिवार में भिन्न-भिन्न संस्कार हैं। तो इतने बड़े परिवार में चलते संस्कारों को समझ एक दो में एक परिवार, एक बाप, एक राज्य, तो एक होके चलना है।

8) बड़े परिवार में एक दो में बड़ी दिल, हर एक के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना की स्थिति में स्थित हो चलना है क्योंकि यहाँ धर्म और राज्य दोनों की स्थापना है। राज्य में परिवार को छोड़कर कहाँ जा नहीं सकते। तो इन चार निश्चय में से एक भी निश्चय कम है तो हलचल में आ जायेंगे।

9) परिवार के साथ निभाना, संस्कार मिलाना, एक-एक को कल्याण की भावना से देखना और चलना, इसमें कई बच्चे यथाशक्ति बन जाते हैं। लेकिन जो परिवार के निश्चय में नॉलेजफुल होके सदा बाप समान साक्षीपन की स्थिति में रह सम्बन्ध में आते हैं, रहते हैं, वही नम्बरवन डिवीजन में आ जाते हैं।

10) परिवार में भाव स्वभाव भी होता है, छोटी-छोटी गलतियां भी होती हैं, विघ्न भी आते हैं, फिर भी परिवार के सम्बन्ध में पास होना है। अगर परिवार के साथ चलने में कोई भी कमी होती है तो वह बहुत तंग करता है। यह क्यों, यह कैसे, परिवार के कनेक्शन में आता है। मुझे सबके साथ मिलकर चलना है। परिवार की प्रीत निभानी है क्योंकि यह भगवान का परिवार है, रिवाजी परिवार नहीं है।

11) भिन्न-भिन्न संस्कार परिवार के बीच में ही निकलते हैं और उन्हें मिलाना खुद को परिवर्तन करना और परिवार को भी इतनी ऊंची दृष्टि से देखना। परिवार में कभी मूड बदली नहीं करे, एकमत होके चले और चलाये। बापदादा विशेष इस बात पर अटेन्शन दिला रहे हैं।

12) संस्कार तो भिन्न-भिन्न होते हैं, होना है, नहीं तो सब राजा बन जायें, फिर राज्य किस पर करेंगे? अच्छी प्रजा भी तो चाहिए, रॉयल प्रजा। तो अपने को चेक करो, अगर परिवार में किसी के संस्कार खराब हैं, लेकिन मेरा संस्कार क्या? उसके खराब संस्कार को देख मेरा संस्कार खराब न हो।

13) विनाश की तैयारियां होते भी अभी विनाश रूका हुआ है, प्रकृति भी बाप के पास आकर कहती है अब बहुत बोझ हो गया है। माया भी कहती है कि मैं जानती हूँ कि मेरा पार्ट अभी जाने वाला है लेकिन ब्राह्मण परिवार में ऐसे भी बच्चे हैं जो छोटी बात में मेरे साथी बन जाते हैं। अभी तक यह चार निश्चय परसेन्ट में हैं इसलिए समय भी रुक रहा है। बाकी माया और प्रकृति दोनों रेडी हैं।

14) अभी लगन की अग्नि को जलाओ। प्यार का रिटर्न है समान बनना, सम्पन्न बनना, सम्पूर्ण बनना। दोनों बाप से प्यार है निराकार बाप समान निराकारी स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करो और कर्म करते फरिश्ता स्थिति में रहो तो कर्म का बोझ प्रभाव नहीं डालेगा।

15) सारे दिन में कम से कम 12 बारी फरिश्ता बनो, 12 बारी निराकार स्थिति में स्थित रहो। अभी जल्दी-जल्दी करो। अचानक कुछ भी हो सकता है जो आपको सेवा करने का भी टाइम नहीं मिलेगा। सरकमस्टांश ऐसे भी बीच-बीच में आ सकते हैं इसलिए तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप तैयार करो।

———